Postal Regn. - RTK/010/2020-22
RNI - HRHIN/2003/10425

ओ३म्

आर्य प्रतिनिधि

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का पाक्षिक मुखपत्र | सितम्बर 2023 (प्रथम-द्वितीय)

Email : aryapsharyana@yahoo.in

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

Visit us : www.apsharyana.org

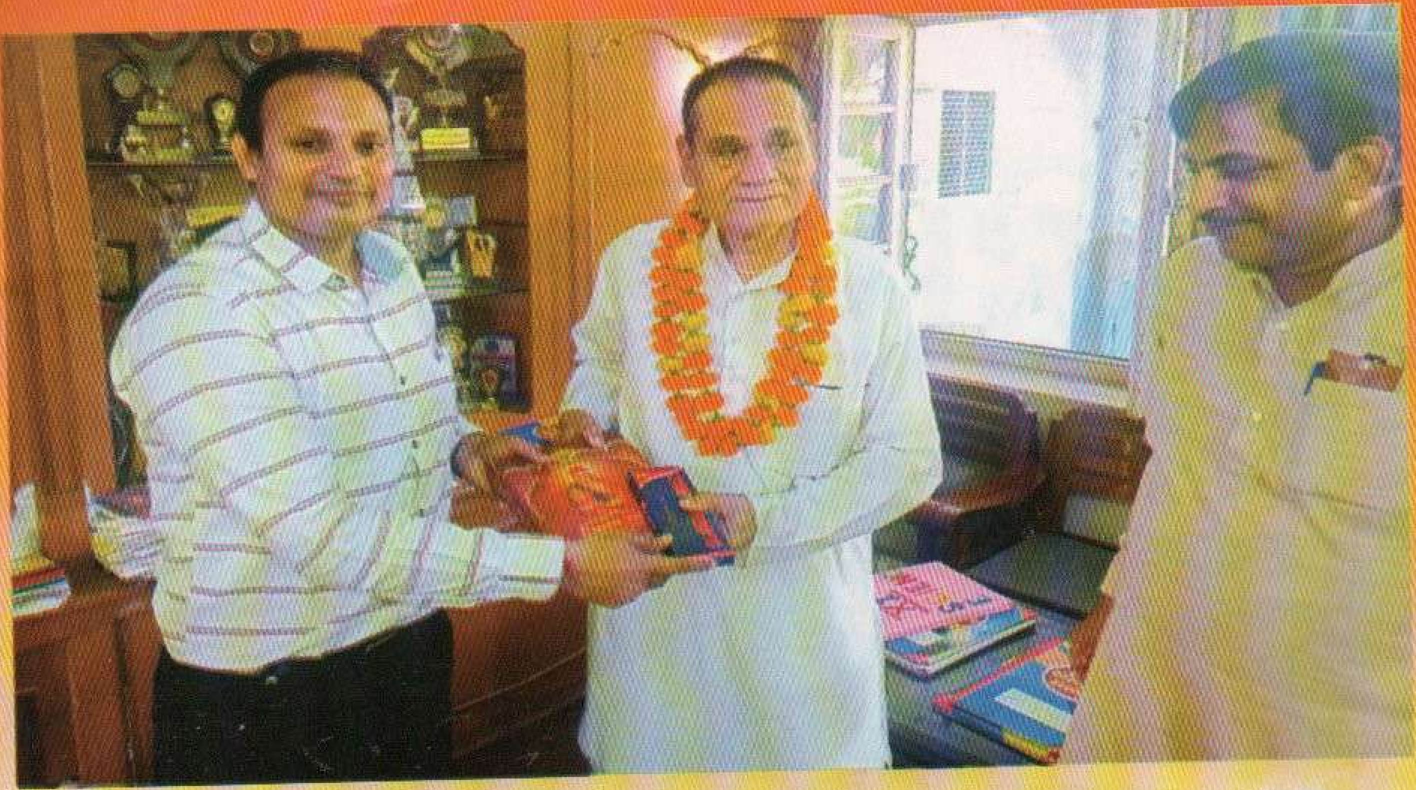

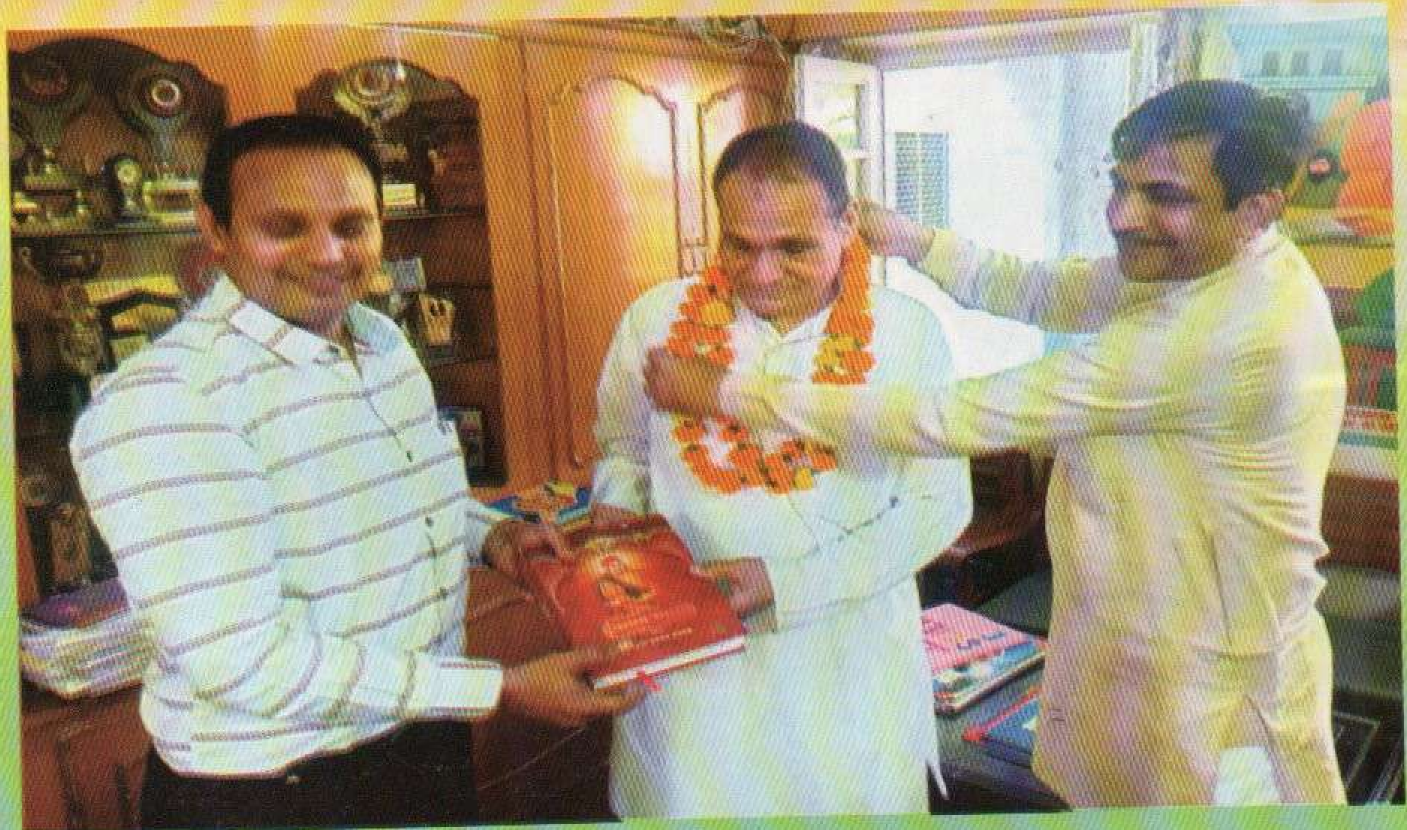

आर्य वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय नरवाना (जीन्द) में आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा दयानन्दमठ रोहतक के महामन्त्री श्री उमेद सिंह शर्मा जी का स्वागत करते हुए पुष्पमाला तथा सत्यार्थप्रकाश भेंट किया। इस अवसर पर श्री चन्द्रकान्त जी एवं प्रिंसिपल महोदय उपस्थित रहे।

सृष्टि संवत् 1,96,08,53,124
विक्रम संवत् 2080
दयानन्दाब्द 200

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा
की
मुख-पत्रिका

वर्ष 19 अंक 15-16

सम्पादक :
उमेद सिंह शर्मा

पत्रिका-शुल्क
देश में
वार्षिक-200 रुपये आजीवन-2000 रुपये
विदेश में
वार्षिक शुल्क 100 डॉलर
आजीवन 400 डॉलर

पत्रिका का स्वामित्व
आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा (रजि०)
सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ,
गोहाना रोड, रोहतक-124001

सह-सम्पादक
आचार्य सोमदेव

सम्पादकीय विभाग
सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक
सम्पर्क सूत्र-
चलभाष :-
मो० 89013 87993

॥ ओ३म् ॥

आध्यात्मिक, सामाजिक, राष्ट्रीय चिन्तन एवं वैदिक जीवन मूल्यों की पाक्षिक पत्रिका

आर्य प्रतिनिधि

सितम्बर, 2023 (प्रथम-द्वितीय)

1 से 30 सितम्बर, 2023 तक

इस अंक में....

1. सम्पादकीय-वेद-प्रवचन 2
2. विदुर-नीति प्रश्नोत्तरी 3
3. सामयिक विचार-हमारा प्रतिनिधि कैसा हो? 4
4. आनन्दमय जीवन जीने का आध्यात्मस्वरूप 5
चिन्तन अपने में परमात्मा की मौजूदगी का हर समय एहसास
5. पुरानी आर्यसमाजी 7
6. क्या महाभारत में मन्त्र हैं? 8
7. संगठन में शक्ति 9
8. हमारा यह संसार तीन अनादि व नित्य सत्ताओं की देन है 10
9. समाचार-प्रभाग व शेषभाग 12

आर्य प्रतिनिधि पाक्षिक पत्रिका के प्रसार में सहयोग दें

'आर्य प्रतिनिधि' पाक्षिक उलट-पलटकर रख देने लायक नहीं, बल्कि गंभीरतापूर्वक पढ़ने योग्य पत्रिका है। यदि आप इसके पाठक बनेंगे तो हमें विश्वास है कि पसन्द भी करेंगे और चाहेंगे कि इसे अन्य लोग भी पढ़ें। कृपया अपने जैसे गम्भीर पाठकों से 'आर्य प्रतिनिधि' पाक्षिक पत्रिका की चर्चा करें, उन्हें इसका ग्राहक बनने के लिए प्रेरित करके ऋषि ऋण से अनृण होवें।

'आर्य प्रतिनिधि' पाक्षिक का वार्षिक शुल्क 200/- रुपये एवं आजीवन शुल्क 2000/- रुपये है।

आप उपरोक्त राशि 'आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा' दयानन्दमठ रोहतक के नाम से बैंक ड्राफ्ट/मनीऑर्डर द्वारा भिजवाकर सदस्य बन सकते हैं।

—सम्पादक

सम्पादकीय...

वेद-प्रवचन

❑ संकलन–उमेद शर्मा, मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, दयानन्दमठ, रोहतक

गतांक से आगे...

वह बुद्धि-अतीत है, आप उससे आकर्षित है, आप न उसके अस्तित्व से इनकार कर सकते है और न उसके सम्पर्क से पृथक् होने को ही जी चाहता है। वह सुगन्ध चित्र भी है और चन्द्र भी। परमात्मा की सत्ता भी ऐसी ही है। मन्त्र के पहले भाग मे चार शब्द आये **चित्र, चित्रक्षत्र, चित्रम्** और **चित्रतमम्**। चित्र और चित्रक्षत्र सम्बोधन हैं। ईश्वर को 'चित्र' शब्द से पुकारा क्योकि न वह दीखता है, न सुनाई देता है। न उसे छू सकते हैं, न सूंघ सकते हैं, न चख सकते है, पूरा-पूरा मनन भी नहीं कर सकते परन्तु क्या हम इसके अस्तित्व से इनकार कर सकते है? हम स्वयं अपने आपको भी तो नहीं देख सकते, परन्तु क्या हमारा हमारे शरीर में अस्तित्व विचित्र नहीं है? जब हम गहरी नींद से सोकर उठते हैं तो कह उठते हैं, ''बड़े आनन्द से सोये।'' यह आनन्द कहाँ से आ गया? चारों ओर विचित्रता ही दिखाई पड़ती है। इसलिए परमेश्वर को '**चित्र**' भी कहा और '**चित्रक्षत्र**' भी। वह स्वय 'चित्र' है और उसके द्वारा जो 'चित्र' सृष्टि रची हुई है उसकी रक्षा भी करता है। जितनी बुद्धि लड़ाइए उतनी ही चित्रता बढ़ जाती है। जैसे उड़ते हुए पक्षी को आकाश अधिक विस्तीर्ण दिखाई देता है, इसी प्रकार 'चित्र' तथा चित्रक्षत्र ईश्वर की विचित्रता भी कम होने की बजाय अधिक हो जाती है। 'वयोधा' अर्थात् हमारी आयु को धारण करने वाली सृष्टि 'चित्रम्' और 'चित्रतमम्' बन जाती है। अन्त में उपनिषद्कार के मुंह से निकल जाता है–'**अविज्ञातं विजानतां विज्ञातमविजानताम्**' (केन उपनिषद् 2.2) ''जानने वालों के लिए न जाना हुआ और न जानने वालों के लिए जाना हुआ।'' अब थोड़ा-सा चित्र की चित्रता पर विचार कीजिए। अपने घर को देखिये, फिर ग्राम या नगर को, फिर देशभर को, फिर भूगोलमात्र पर दृष्टि डालिए। भूगोल का गोला कीजिए, उस पर अपने नगर को चिह्नित कर दीजिए। भूमण्डल कितना विशाल है? परन्तु सूर्य तो पृथिवी से 13 लाख गुणा बड़ा है। 13 लाख लिखने या कहने में छोटा है। राई के 13 लाख दाने गिनगर इकट्ठा कीजिए। आपकी बुद्धि चकरा जाएगी। यह यह चित्रता कम है? क्या आपने इस चित्रता की कल्पना की है? अथवा 'चित्रता' ने बलात् आपकी बुद्धि को अपना स्वत्व मनवाने के लिए बाधित किया है? फिर सूर्यमण्डल भी तो सृष्टि का एक छोटा-सा अंग है। यह सब कल्पना नहीं हो सकती। जो कल्पना हैं वह अपनी बुद्धि का ही खेल है, उसमें चित्रता या आश्चर्य (Wonder) कैसा? जो आश्चर्य (Wonder) है वह कल्पना कैसे? इसलिए जो नास्तिक 'ईश्वर-भावना' कल्पित कहते हैं वे मानव मस्तिष्क की अवहेलना करते हैं। हाँ, इतना तो ठीक है कि ईश्वर के गुणों के विषय में लोगों ने भावनाओं की भी कल्पना की है। कल्पना मानवीय चित्त की एक वृत्ति है। जब चित्रकार कल्पना करने लगता है तो चित्र बनाते समय एक पतंगे पर चार हाथियों को टांग देता है, परन्तु वह कल्पना तथ्य तो नहीं होती।

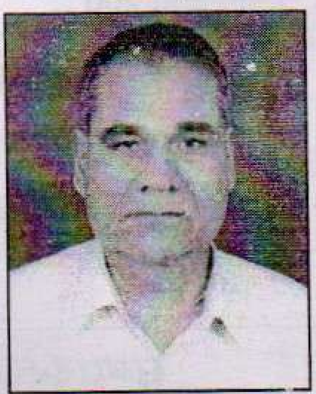

मन्त्र के दूसरे भाग में ईश्वर को '**चन्द्र**' कहा, क्योंकि समस्त जगत् हमारे सुख के लिए है। सृष्टि को यदि एक बारात से उपमा दी जाए तो 'हम' इसके दूल्हा हैं, बिना दूल्हे के बारात कैसी और बिना 'जीव' सृष्टि कैसी? 'चन्द्र' का अर्थ है आह्लादकारी (चदि-आह्लादे)। इसलिए इस सृष्टि को चन्द्रम् (सुखदायक), रयिम् (धनधान्यशाली), पुरवीरम् (वीर-पुत्र-पौत्र आदि साथियों तथा सामाजिक सुखों से युक्त) बृहन्तम् (बड़ा) कहा और प्रार्थना की कि हे परमात्मन्! हम 'चन्द्राभिः' अर्थात् सुख देने वाली स्तुतियों द्वारा आपकी गृणते (स्तुवते) प्रार्थना करने वाले हैं, ऐसे हमको आप आह्लादकारी आनन्द दीजिए।

गृणते (स्तुवते) चतुर्थी एकवचन है। तात्पर्य बहुवचन का है। 'चन्द्राभिः स्तुवते' का अर्थ है आनन्द देने वाली स्तुतियाँ। जब भक्त लोग ईश्वर की भक्ति के भजन गाते हैं तो उनको आनन्द आने लगता है। चीनी-चीनी कहने से मुंह

क्रमशः पृष्ठ 16 पर....

विदुर-नीति प्रश्नोत्तरी

❑ संकलन–कन्हैयालाल आर्य, संरक्षक–आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, रोहतक

गतांक से आगे....

प्रश्न 57. किस-किस बात के लिए शोक करना चाहिये अथवा कौन-कौन से कार्य शोचनीय हैं?

उत्तर-(1) विद्या से विहीन मनुष्य शोचनीय है।

(2) जिस मैथुन (स्त्री संसर्ग) से सन्तानोत्पत्ति न हो वह शोचनीय है।

(3) आहार और आजीविका प्राप्त न करने वाली (खाद्य सामग्री से रहित, भूखी) प्रजा शोचनीय है।

(4) नृपविहीन राष्ट्र शोचनीय है।

यहां भाव यह है कि मूर्ख के लिए शोक करना चाहिये, वह समाज और राष्ट्र के लिए घातक है। स्त्री संसर्ग केवल सन्तानोत्पत्ति के लिए करना चाहिये, वासना पूर्ति के लिए नहीं। स्त्री को केवल भोग की वस्तु की न माना जाये। भूखी प्रजा की आहें एवं भावना राष्ट्र को हानि पहुँचा सकती हैं। जिस राष्ट्र का कोई राजा या शासक नहीं होगा वहां अराजकता होनी स्वाभाविक है।

प्रश्न 58. कौन-सी वस्तु किस के लिए बुढ़ापे का सूचक है या क्षीण करने वाला है?

उत्तर-(1) देहधारियों के लिए अधिक पैदल चलना बुढ़ापा है अर्थात् आयु को क्षीण करने वाला है।

(2) पर्वतों के लिए जल क्षारक है, जल पर्वतों की मिट्टी को बहाकर उन्हें क्षीण कर देता है।

(3) इच्छा होने पर मैथुन (सम्भोग) से वंचित रह जाने से स्त्री की आयु क्षीण हो जाती है। अर्थात् स्त्रियों के लिए कष्टदायक बुढ़ापे के समान है।

(4) कटुवचन रूपी बाण मन को अशक्त करने वाला या पीड़ा देने वाला है।

यहां भाव यह है कि देहधारियों को एक सीमा तक पैदल चलना तो स्वास्थ्य के लिए ठीक है परन्तु प्रतिदिन अधिक से अधिक पैदल चला जाए तो शीघ्र ही बुढ़ापा आ जाएगा। जल यदि लगातार पर्वतों से टकराये तो पर्वत धीरे-धीरे कमजोर हो जाते हैं। जब स्त्रियां सम्भोग की रुचि रखतीहों, उस समय उनको सम्भोग से वंचित कर दिया जाये तो उनके मन-मस्तिष्क पर आघात लगता है, जो शीघ्र ही बुढापा आने का संकेत है। कड़वे वचन भी दु:ख देने वाले होते हैं, लोक में प्रसिद्ध है तलवार का घाव तो समय के साथ भर जाता है परन्तु वाणी द्वारा किया गया घाव (बोला गया कटुवचन) सदा-सदा के लिए पीड़ादायक हो जाता है।

प्रश्न 59. वेद, ब्राह्मण, पृथ्वी, पुरुष, पतिव्रता स्त्रियां तथा सभी प्रकार की स्त्रियों का मल कौन-कौन-सा है?

उत्तर-(1) वेदों का मल अभ्यास न करना। यदि वेदों का निरन्तर अभ्यास नहीं किया जाये तो वही वेद पशु द्वारा बोझ उठाने के समान हैं।

(2) ब्राह्मण का मल विपरीत आचरण है। यदि ब्राह्मण का आचरण ठीक नहीं है तो वह ब्राह्मण कहलाने योग्य नहीं है।

(3) पृथ्वी का मल ब्राह्लीक (बलख) देश है।

(4) पुरुष का मल झूठ बोलना है। झूठे व्यक्ति पर कोई विश्वास नहीं करता तो उस झूठे पुरुष का जीवन व्यर्थ (मल) के समान है।

(5) पतिव्रता स्त्रियों का मल दूसरों से कटाक्ष, उपहास, हास्य आदि क्रियाएं हैं। यदि कोई स्त्री किसी के साथ मजाक आदि करती है तो वह निश्चित रूप से अपने चरित्र से गिर जायेगी। अत: पतिव्रता स्त्रियों को पति के अतिरिक्त दूसरे पुरुषों के साथ मजाक आदि नहीं करना चाहिये।

(6) सभी प्रकार की स्त्रियों का मल दूसरों के घर में वास करना है। कोई स्त्री किसी के घर जाकर रहने लग जाये तो अपने शील को सुरक्षित नहीं रख सकती। अत: अपने पाप को सुरक्षित रखने के लिए सभी स्त्रियों को अपने-अपने आवास पर ही रहना चाहिये।

क्रमशः अगले अंक में...

सामयिक विचार—हमारा प्रतिनिधि कैसा हो?

❑ भद्रसेन वेद-दर्शनाचार्य, संपर्क-B-2, 92/7B, शालीमार नगर, जिला होशियारपुर (पंजाब) मो० 9464064398

भारतीय संविधान और प्रशासन के प्रजातन्त्रात्मक होने से हमें लोकसभा, विधनसभा, नगर पालिका या पंचायत के रूप में कई बार अपने प्रतिनिधियों को चुनने का अवसर मिलता है। तब हमारे सामने प्रश्न उपस्थित होता है कि हमारा प्रतिनिधि कैसा हो? हम अपना प्रतिनिधि किसलिए चुनते हैं, अब हम इस पर विचार करते हैं तो स्वाभाविक रूप से स्वत: इस प्रश्न का उत्तर प्राप्त हो जाता है। अर्थात् हमारे प्रतिनिधि ग्राम, नगर, प्रदेश और राष्ट्र में सुशासन स्थापित करें जिससे हमारा ग्राम, नगर, प्रदेश और राष्ट्र रामराज्य, सुराज्य बनकर अपने नागरिकों के लिए समता, सुरक्षा, स्वतन्त्रता, बन्धुता, समृद्धि और प्रगति देने में समर्थ हो सके। यह एक सर्वमान्य तथ्य है कि योग्य, उत्तरदायित्वपूर्ण व्यक्ति ही योग्य, चिरस्थायी, सुदृढ़, समृद्धिपूर्ण प्रशासन देने में सक्षम होता है। और ऐसा प्रजापतन्त्रीय प्रशासन ही सबके लिए लाभप्रद हो सकता है। अत: हमारा प्रतिनिधि वह व्यक्ति हो, जो ऐसा करने में समर्थ हो।

कैसा प्रतिनिधि सुशासन दे सकता है? इसका एक सुन्दर समाधान अथर्ववेद के बारहवें काण्ड के पृथिवी (भूमि) सूक्त में मिलता है। यहाँ बताया गया है कि अपनी पृथिवी, मातृभूमि को कैसे सत्य, शिव और सुन्दर बना सकते हैं। अर्थात् हमें अपने देश को उत्तम, समृद्धिशाली बनाने के लिए क्या-क्या करना चाहिए। प्रस्तुत प्रसंग की दृष्टि से इस सूक्त का पहला मन्त्र विशेषरूप से विचारणीय है –

सत्यं बृहदृतमुग्रं दीक्षा तपो ब्रह्मयज्ञः पृथिवीं धारयन्ति।
सा नो भूतस्य भव्यस्य पत्न्युरं लोकं पृथिवी नः कृणोतु॥
(12.1)

सत्यम्=मन-वाणी और कर्म की एकरूपता, क्योंकि महात्माओं, सच्चों के जैसा मन में होता है, वैसा ही वाणी और व्यवहार में होता है, झूठे ही सोचते कुछ हैं, बोलते कुछ और हैं तथा उससे भिन्न ही करते हैं। **मनस्येकम् वचस्येकम् कर्मण्येकम् महात्मनाम्**, कथनी और करनी में एक जैसापन हो, न कि हाथी के दांतों की तरह (खाने के और, दिखाने के और)। कथनी और करनी में भेद न हो अर्थात् दुहरी जिन्दगी न हो, यही सदाचार है। बृहत्=उदारता, हृदय की विशालता, सहानुभूति। विशाल हृदय वाला ही सबके प्रति सहानुभूति व्यक्त कर सकता है, क्योंकि उसके

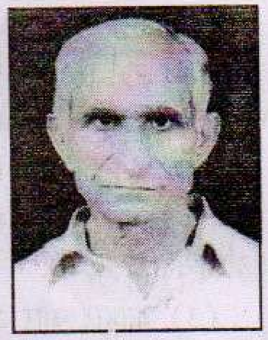

व्यवहार में अपने पराये का भेदभाव नहीं होता (निष्पक्षतावृत्ति)। ऋतम्=नियमों का पालन, संविधान के प्रति विश्वास भावना, कर्त्तव्य-परायणता। उग्रम्=प्रशासन के संचालनार्थ दृढ़स्वभाव, न्याययुक्त सामाजिक नियमों का कठोर पालन। दीक्षा=योग्यता (व्रतेन दीक्षामाप्नोति=किसी कार्य को करने से तत्विषयक योग्यता प्राप्त होती है), कार्यकुशलता। तप:=संयम, भूख-प्यास आदि द्वन्द्व-कष्ट सहन शक्ति, नियमित जीवन, सभी इन्द्रियों को अपने काबू में करना, न कि उनके काबू में हो जाना, अर्थात् विलासी जीवन का अभाव। ब्रह्म=ज्ञान, शिक्षा, विद्या। और यज्ञ:=अच्छे, दूसरों का भला करने वाले कर्म अर्थात् दूसरे की भलाई करने की भावना। ये सत्य आदि गुण ही विकास, समृद्धि को धारण करते हैं। सत्य आदि गुणों से युक्त पृथिवी राष्ट्रवासियों के भूत, भविष्य और वर्तमान की रक्षिका एवं निर्मात्री होती है। तभी कोई देश दर्शनीय, प्रशंसनीय, विकसित और समृद्ध होता है।

इस मन्त्र का सीधा-सा भाव यही है कि जिस देश के नागरिक और विशेष रूप से प्रतिनिधि सत्य आदि गुणों से युक्त होते हैं, वही देश सुखी, सम्पन्न तथा समृद्ध हो सकता है। अत: हमारे प्रतिनिधि ऐसे ही हों या उन्हीं को शासकपद पर प्रतिष्ठित करना चाहिए, जिनके जीवन और व्यवहार में इन गुणों का समावेश हो, अन्यथा '**बबूल के बीज बोकर आम** खाने' की आशामात्र ही है। अत: प्रजातन्त्र देश के प्रतिनिधियों का सबसे मुख्य गुण-सहानुभूति ही है, क्योंकि मतदाताओं को अपने विविध कार्यों के लिए प्राय: उनके

क्रमश: पृष्ठ 12 पर....

आनन्दमय जीवन जीने का आध्यात्म स्वरूप चिन्तन अपने में परमात्मा की मौजूदगी का हर समय एहसास

❑ पण्डित उम्मेद सिंह विशारद, वैदिक प्रचारक

एक दिन में हम कितनी बार परमात्मा को याद करते हैं एक या दो बार? बाकी समय में क्या हम ईश्वर को भूल जाते हैं और अपने को प्रत्येक कर्म का कर्त्ता समझते हैं और यही सोचते हैं हमारे करने से ही सब कुछ होता है। आइए हम ईश्वर को हर समय याद करने की कोशिश करें। निश्चित रूप में प्रभु को हर समय याद करने वाला परमानंद और आत्मखुशी पालेगा। वह प्रत्येक गातिरोध कार्यों का सामना और जीवन में उतार चढ़ाव से प्रभावित नहीं होगा। वह हमारे भीतर की ईश्वरीय शक्ति है जो हमें चुनौतियों का सामना करने के लिए ताकत और साहस देती है। प्रत्येक को कभी न कभी चुनौतियों का सामना करना पड़ता है, कभी तो हैरानी होती है। हमने कैसे चुनौतियों का सामना किया। हम कभी अकेले नहीं होते ईश्वर सदा हमारे साथ रहता है। ईश्वर का अनदेखा हाथ हमेशा हमारे साथ है। हम ईश्वर को देख तो नहीं सकते किन्तु अनुभव कर सकते हैं। दरअसल हम जितना प्रभु का ग्रहणशील होंगे उस शक्ति का उतना ही अधिक महसूस कर सकते हैं। जीवन की चुनौतियों का सामना हम निडर होकर उस सर्वशक्तिमान् ईश्वर का आभार करते हुए सामना करें। लेकिन परिणाम ईश्वर की कर्म व्यवस्था और इच्छा पर छोड़ देते यही ईश्वर का सान्निध्य पाने का तरीका है। इसलिए हमें सदैव अपने साथ ईश्वर का सान्निध्य समझना चाहिए।

जीवन की धन्यता-किसी सात्विक या धार्मिक या सुखद कार्य सम्पन्न होने पर हम अपने को धन्य समझते हैं। जीवन की धन्यता में ही सुखी जीवन का सार छिपा हुआ है। वस्तुत: इस भावना से साक्षात्कार के लिए गहन चिन्तन मनन कर आंतमविश्लेषण बहुत आवश्यक है। ऐसे चिन्तन मनन के लिए मन का एकाग्र होना आवश्यक है।

हम अपनी आने वाली पीढ़ी को अच्छे संस्कार व ज्ञान तभी दे पायेंगे जब हम स्वयं अवसाद प्रसाद और विकृतियों से मुक्त रह सकें। दाता बनने की भावना हमें ईश्वर के अधिक निकट लाती है। जीवन में विकार और अवरोधों का पार करने का एक ही मन्त्र है कि अपनी छमताओं व आवश्यकताओं का सही आकलन करेंगे। संतुलित व शान्त मन वास्तव में सुख का सांकेतिक होता है।

रूढ़ियों से परे हटकर किसी आदेश वैदिक वैज्ञानिक सिधान्त पर चलकर किसी आदर्श के लिये आस्था रखकर अपनी जीवन शैली को ढालना ही धन्यता है। आर्ष साहित्य से रुचि व स्वध्याय, परिजनों की निकटता प्रकृति का सान्निध्य तथा सकारात्मक रुचियों को गढ़ने से ही धन्य हो जाने का अतंरबोध हो जाता है। दूसरों के आनन्द में स्वयं समाहित कर पाना जीवन की धन्यता का अति उत्तम उदाहरण है।

आत्म बोध-जिस दिन हमें ईश्वर, संसार, आत्मा और मानव शरीर के सम्बन्धों की गरिमा का ज्ञान होगा उस दिन हमें अपने जीवन की वास्तविकता का बोध हो जायेगा। तभी तक भौतिकता की मृगतृष्णा हमें हमारे जीवन के उद्देश्य से भटकती रहेगी। प्रत्येक व्यक्ति अपने जीवन में सुख व समृद्धि चाहता है, किन्तु बदले में वह समाज व राष्ट्र को क्या देता है यह विचार करने की बात है। प्रभु ने हमारा शरीर सेवा के लिए दिया है जीवन ईश्वर मार्ग पर चलने का एक अवसर है।

ईश्वर, संसार, आत्मा और मानव शरीर का आपस में अन्योन्याश्रित सम्बन्ध है। एक के बिना दूसरे की गणना नहीं की जा सकती। हमारी आत्मा परमात्मा का प्रतिनिधि है निरन्तर उन्हीं में लीन होने की दिशा में अग्रसर रहती है, क्योंकि इस मानव तन और जीवन का अतिंम लक्ष्य परमात्मा मिलन अर्थात् मोक्ष ही है। प्राय: हमारी सारी उमर खाने कमाने व परिवार चलाने में ही निकल जाती है और जब आत्मबोध होता है तब न यह शरीर साथ दे पाता है न ही दिलोदिमाग। तब बहुत देर हो चुकी होती है। हम सत्य को जाने और जीवन को सफल करें।

आनन्दमय जीवन जीने का मार्ग-परमात्मा उसे नहीं कहते जो कभी हो और कभी न हो। परमात्मा सदैव है। पहले भी था अब भी है और आगे भी रहेगा। परमात्मा उसे भी नहीं कहते जो कहीं हो और कहीं न हो। परमात्मा सर्व है सर्वव्यापक है। परमात्मा उसे भी नहीं कहते जो किसी का हो और किसी का न हो परमात्मा सबका है। तो आपका व हमारा परमात्मा हमारे में मौजूद है। यदि यह बात हमारे समझ आ जाए तो हमें बड़ी शान्ति मिलेगी और जीवन हृदय आनन्द से भर जायेगा। आप निर्भय और निश्चिन्त होकर रहेंगे। शरीर तो साधन सामग्री है, भोग सामग्री नहीं है। शरीर को अपना न माने अपने लिये न माने उसे परमात्मा के विश्वरूप वाटिका की खाद बनादे तो मानव जीवन प्रेमास्पद की स्थली बन जायेगा जिससे प्रेम और आनन्द की गंगा सदैव लहलहाती रहेगी। जो साधक विवेक के प्रकाश में शरीर और संसार को भूल जाता है उसकी दृष्टि में सृष्टि ही नहीं। वह शरीर धर्म से ऊपर उठ जाता है।

हमारी मार्गदर्शक सदैव आत्मा रहती है-हमारी आत्मा सच्चे गुरु की तरह होती है, जो हमें सदैव सत्य मार्ग दिखाती है। यदि मनुष्य आत्मा की आवाज सुन लेवे तो वह महान् बन जाता है। यह आत्मा ही वह दीपक है जो उसे इस जीवन की सच्चाई को दिखा सकता है। उसकी आत्मा ही उसकी सच्ची ग्रह है, बस देर है उसे पहचानने की। जिस प्रकार मृग कस्तूरी के लिये वन-वन भटकता रहता है, किन्तु वह स्वयं उसी के पास होती है। उसी प्रकार मनुष्य अपने भीतर विद्यमान अपनी आत्मा को पहचान ले तो उसे किसी और की जरूरत नहीं है। मनुष्य जब कोई गलत कार्य करने लगता है तो उसकी आत्मा उसे गलत कार्य करने से रोकती है पर वह उस आवाज को नहीं सुनता है और गलत मार्ग पर चलने लगता है जब उसे होश आता है तब तक वह सब कुछ खो चुका होता है। जो लोग अपनी आत्मा की आवाज सुन लेते हैं वह महान् बन जाते हैं। आत्मा ही परमात्मा का रूप होती है। इससे मनुष्य को सत्य मार्ग पर चलते हुए परमात्मा से साक्षात् करने विलक्षण क्षमता प्राप्त होती है। साथ ही वह अपनी संवेदना को मानने समझने की सामर्थ्य प्राप्त होती है।

मनुष्य को अपनी आत्मा को पहचाने का प्रयत्न करना चाहिए। आत्मा के अनुसार चलने पर सभी प्रकार की सात्त्विक सफलताएं मिलना सुनिश्चित है। हमारी आत्मा कोई कार्य करने में हिचके तो वह कार्य नहीं करना चाहिए। आत्मा आपको संकेत भी करती है, आगे क्या होने वाला है। आपके साथ भविष्य में क्या होने वाला है। यह आत्मा को पता होता है। आत्मा हमारी सच्ची मित्र है। इस समय समाज में जो अनाचार और भ्रष्टाचार हो रहा है वह आत्मा की आवाज सुनने से समाप्त हो सकता है। हम अपनी आत्मा की आवाज तो सुनकर देखें।

आत्मा की आवाज सुनकर चलने से ही हमें भी असीम शान्ति और आनन्द का अनुभव होगा। साथ ही हमारे आस पास का परिवेश भी सुखद होगा। हमारा शरीर एक मन्दिर है जिससे आत्मा रूप परमात्मा सदैव विराजमान रहते हैं। इस बात को ध्यान में रखते हुए यदि हम लोक व्यवहार करें साथ ही अपने आचरण को परिष्कृत करते हुए उत्कृष्ट बनाए रखें तो जीवन में तमाम गलत कार्यों से बच सकते हैं। इस संदर्भ में प्रभु सदैव हमारी मदद करेंगे।

सात्त्विक भावना-हमारे अन्त:करण में सात्त्विक, तामसिक, राजसिक तीन प्रकार की वृतियां होती हैं। अत: शारीरिक भावना ईश्वर परक आत्मा की कल्याणकारी है। राजसिक भावना जगत् के विषय भोगों की भावना है। हिंसापूर्वक अज्ञानता से परिपूर्ण तामसिक भावना है। सात्त्विक भावना जहाँ जगत् के बन्धन से छुड़ाती है वहां अन्य दोनों दु:खों से बांधने वाली भावनाएं हैं। मानव पर संगति का व्यापक प्रभाव पड़ता है। चित की चंचलता हृदय की मलिनता अकर्मण्यता आलस्य तथा प्रतिकूल स्वभाव के कारण सत्पुरषों का संग देर से प्रभावित करता है।

स्वभाव मनोकूल होने से संसारी पुरुषों को कुसंग तुरन्त प्रभावित करता है। मनुष्य अपनी-अपनी भावनानुसार देखता है, मानव का व्यवहार समाज में भावना के अनुसार विद्यमान है। सत्यभावना से ही सद्भावना बढ़ती है। स्वयं अंधेरे में रहने के कारण प्रकाश को सहन न कर पाने की दृष्टि गलत है। किसी को नीचा करके उंचाई पाना असम्भव है। सच्चाई की आलोचना प्रशंसादायक होती है। अकारण विरोध श्रम करने वाले को प्रेरणा देता है। सत्य संसार से नि:संगता आती है, जिससे ईश्वर में अनुराग बढ़ता है।

सम्पर्क-गढ़ निवास मोहकमपुर, देहरादून (उत्तराखण्ड)
मो० 9411512019, 9557641800

पुराने आर्यसमाजी

❑ देशराज आर्य, सेवानिवृत प्रधानाचार्य, 725, सै०-4, रेवाड़ी, मो० 9416337609

जीवन के 74 वर्ष पूर्ण कर लिए। बचपन से ही आर्यसमाज के संस्कार होने के कारण आर्यसमाज से जुड़ा रहकर इस लम्बे जीवन में अनेक आर्यसमाजी शक्सियतों से मिलने का सौभाग्य मिला। आज से 40-50 वर्ष पूर्व के आर्य सज्जनों का जीवन सादगी एवं संजीदगी से ओतप्रोत होता था जो देखने वाले को बिना कुछ कहे ही प्रभावित करता था। ऐसी ही एक शख्सियत को धोती-कुर्ता पहने कन्धे पर चद्दर डाले सदैव भागमभाग में रहने वाले महाशय श्री रामचन्द्र जी आर्य नम्बरदार को अवश्य ही जलसों, उत्सवों व समारोहों में देखा होगा। घर और गाँव में बहुत कम ठहरते थे। भाग्य की नियति कि उनका एक पैर घुटने तक कट गया। वे कनीना में सड़क के किनारे किसी खोखे के बाहर मुढे पर बैठे थे। एक बस की टायर की रिम निकलकर दूर बैठे उनके घुटने से जा लगी तथा अस्पताल में पैर काटना पड़ा। यदि ठीक चहने लायक होते तो अब भी आप कहीं न कहीं मिल ही लिया करते। आर्यसमाज के दीवाने थे, आवाज सुरीली थी, भजन भी सुनाया करते थे। इनमें पुराने समर्पित आर्यसमाजियों के गुण थे। इनके पिता महाशय बख्तावर सिंह नम्बरदार भी कट्टर आर्यसमाजी थे। भोर में उठकर जोहड़ में स्नान कर सदैव सफेद खद्दर के धोती कुर्ता पहनते थे। उन दिनों गांवों में जोहड़ का पानी साफ रखते थे, ताकि नहाने, धोने तथा कभी पीने के भी काम आता था।

गांव नौताना खण्ड कनीना जिला महेन्द्रगढ़ के इसी परिवार में एक जनवरी उन्नीस सौ सैंतीस में महाशय रामचन्द्र नम्बरदार का जन्म हुआ। गांव में हाईस्कूल था, परन्तु महाशय जी 5-6 जमात पढ़ने के बाद कृषिकार्य में लग गये। आर्य विचारधारा परिवार से मिलने के कारण युवा अवस्था से ही भजन गाना, सफेद धोती कुर्ता पहनना, किसी प्रकार का नशा न करना, स्वांग, नाच, रामलीला में नहीं जाना बल्कि विरोध करना उनकी आदत बन गई थी।

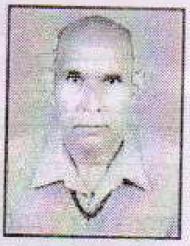

ब्याह शादी में बारात में नाच का विरोध करते थे। कई अवसरों पर तो नाच को बन्द करवाने में हाथापाई भी हो जाती थी। कई बार अकेले ने ही बारातियों के लात और घूसे खाये। नौताना गांव में कभी स्वांग या रामलीला नहीं होने दी। उन दिनों आर्य भजन मण्डलियां बिना बुलाये ही गांवों में आ जाती थीं। गांव का चौकीदार हांका मारता था तथा गांव के बीच में लालटेन या गैस (पेट्रोमेक्स) की रोशनी में मेज या तिपाये पर हारमोनियम रख भजनी खड़ा रहकर भजन गाता तथा साजिन्दे खाट पर बैठकर साथ देते थे। मण्डली के ठहरने भोजन पानी की व्यवस्था महाशय जी ही करते थे।

पण्डित ताराचन्द जी का महाशय रामचन्द्र से विशेष जुड़ाव था। आस-पड़ोस के गांवों की तुलना में नौताना में ढोंग-पाखण्ड तो कम था, परन्तु आर्यसमाजी नहीं बन सके। महाशय रामचन्द्र ही गांव के अकेले आर्यसमाज की पहचान थे। मास्टर कुन्दनलाल जी सेवानिवृत्ति के बाद गुरुकुल झज्जर में रहते थे। नौताना गांव में कई वर्षों तक रहे थे। वे भी कभी-कभी स्कूल प्रार्थना में 'गायत्री मन्त्र, ओं विश्वानि' मंत्र बोलकर उपदेश दिया करते थे। महाशय रामचन्द्र ने स्वयं के पैसे से जोहड़ के पास एक कमरा तथा 100 वर्ग गज भूखण्ड की चारदीवारी भी बनवाई थी। हवन आदि का कार्य सूर्यग्रहण आदि अवसरों पर करते थे। अकेले होने के कारण आर्यसमाज का उत्सव कभी नहीं करवा सके। महाशय जी का व्यक्तिगत जीवन वेश-भूषा, आचार-विचार, स्वभाव, चाल-चलन सदैव दूसरों का प्रभावित करने वाला रहा। नमस्ते उनका अभिवादन बच्चों तक भी प्रचलित था।

वर्तमान में महाशय रामचन्द्र जी अब गांव में ही रहते हैं। वे 86 वर्ष की आयु में स्वस्थ हैं। एक पैर के कारण कहीं आना-जाना सम्भव नहीं है। महाशय जी के तीन

शेष पृष्ठ 16 पर....

क्या महाभारत में मन्त्र हैं?

❑ राजेश आर्य, गांव आट्टा, जिला पानीपत मो० 9991291318

गतांक से आगे....

यद्यपि श्रीकृष्ण पाण्डवों के प्रति किये गये कौरवों के अन्याय को मिटाने के लिए युद्ध को आवश्यक मानते थे, पर वे सम्पूर्ण राष्ट्र को युद्ध की आग में झोंकने से बचाना चाहते थे। इसीलिए हठी व धूर्त दुर्योधन की सभा में शान्तिदूत बनकर गये। उन्होंने युधिष्ठिर से कहा–

उभयोरेव वामर्थे यास्यामि कुरुसंसदम्॥ 79॥
शमं तत्र लभेयं चेद् युष्मदर्थमहापयन्।
पुण्यं मे सुमहद् राजंश्चरितं स्यान्महाफलम्॥ 80॥
मोचयेयं मृत्युपाशात् संरब्धान् कुरुसृजयान्।
पाण्डवान् धार्तराष्ट्रांश्च सर्वां च पृथिवीमिमाम्॥ 81॥

राजन्! मैं दोनों पक्षों के हित के लिए कौरवों की सभा में जाऊँगा। वहाँ जाकर आपके लाभ में किसी प्रकार की बाधा न पहुँचाते हुए यदि मैं दोनों पक्षों में सन्धि करा सका, तो मैं समझूँगा कि मेरे द्वारा यह महान् फलदायक एवं बहुत बड़ा पुण्यकर्म सम्पन्न हो गया। ऐसा होने पर एक-दूसरे के प्रति रोष से भरे हुए इन कौरवों, सृंजयों, पाण्डवों और धृतराष्ट्र पुत्रों को तथा इस सारी पृथिवी को भी मानो मैं मौत के फन्दे से छुड़ा लूँगा। (उद्योग० 72)

जानाम्येतां महाराज धार्तराष्ट्रस्य पापताम्।
अवाच्यास्तु भविष्यामः सर्वलोके महीक्षिताम्॥

(उद्योग० 72-85)

"महाराज! धृतराष्ट्र पुत्र दुर्योधन कितना पापाचारी है, यह मैं जानता हूँ, तथापि वहाँ जाकर सन्धि के लिए प्रयत्न करने पर हम सब लोग सम्पूर्ण जगत् के राजाओं की दृष्टि में निन्दा के पात्र न होंगे।" विदुर के पास जाकर भी यही कहा–

न मां ब्रूयुरधर्मिष्ठा मूढा ह्यसुहृदस्तथा।
शक्तो नावारयत् कृष्णः संरब्धान् कुरु पाण्डवान्॥

(उद्योग० 93-16)

"मैं तो यही चाहता हूँ कि संसार के पापी, मूढ़ एवं शत्रुभाव रखने वाले लोग मुझे यह न कहें कि सामर्थ्यवान् होते हुए भी कृष्ण ने क्रोधयुक्त कौरवों और पाण्डवों को युद्ध करने से नहीं रोका।"

ये थे श्रीकृष्ण के उच्च भाव। पर प्रश्न उपस्थित होता है कि शान्ति प्रस्ताव ले जाने (उद्योग०अ० 83) से पूर्व ही श्रीकृष्ण ने दुर्योधन और अर्जुन में अपना और अपनी सेना का विभाजन (उद्योग०अ० 7) कैसे कर दिया? क्या भीष्म, द्रोण, कृप व शल्य की तरह कृष्ण भी दुर्योधन के किसी दबाव में थे, जो उसको सहायता देने से मना न कर सके और अपनी सेना उसे दे दी? क्या वह सही अवसर नहीं था, उसे फटकारने का? क्या हर अच्छे-बुरे की सहायता करना आवश्यक था? पहले उसे लड़ने के लिए सेना दें और बाद में उसे लड़ने से मना करें। यह कैसा मजाक है? कथावाचक गुरु और श्रोता भक्त इस प्रसंग (कि अर्जुन ने नारायणी सेना की उपेक्षा कर भगवान् श्रीकृष्ण को मांग लिया और महाभारत जीत लिया) से भले ही आनन्दित होते हों, पर मुझे तो प्रक्षिप्त लगता है, क्योंकि शान्ति का प्रयास पहले होना चाहिए और उसके विफल होने पर युद्ध की तैयारी (सहायता देना)। कृष्ण दुर्योधन के अन्याय, अत्याचार से खूब परिचित थे और उसे मिटाने के लिए युधिष्ठिर, भीम व अर्जुन (यदि गीता को प्रमाण मानें) को बार-बार युद्ध के लिए प्रेरित करते रहते थे। फिर उसके पक्ष में लड़ने के लिए अपनी सेना कैसे दे सकते थे?

यदि यादव सेना दुर्योधन की तरफ से लड़ी थी, तो इसका कारण बलराम का दुर्योधन के प्रति पक्षपात भी हो सकता है। वैसे भी अर्जुन द्वारा सुभद्रा का अपहरण करने के कारण सम्पूर्ण यादव सेना व बलराम पाण्डवों के प्रति क्रोध से भर गये थे और बलराम ने तो यहाँ तक कह दिया था कि–

अद्य निष्कौरवामेकः करिष्यामि वसुंधराम्।
न हि मे मर्षणीयोऽयमर्जुनस्य व्यतिक्रमः॥

(आदि० 219-31)

"अर्जुन का यह अन्याय मेरे लिए असह्य है। आज मैं अकेला ही इस वसुन्धरा को कुरुवंशियों से विहीन कर

शेष पृष्ठ 13 पर....

संगठन में शक्ति

—डॉ० विवेक आर्य

एक दिन एक राजा ने मंत्री से कहा, "मेरा राज्य के योग्य प्रजाजनों को सम्मानित करने का विचार है, आप मुझे बतायें कि उनका चुनाव कैसे हो?" मंत्री ने कुछ सोचकर उत्तर दिया ,"राजन्, आपके राज्य में योग्यजन तो बहुत हैं, मगर उनमें एकता का सर्वथा आभाव है। वे अपनी शक्ति एक दूसरे की प्रगति में रोड़ा अटकाने व्यय कर देते हैं।" राजा को मंत्री की बात अटपटी लगी। उन्होंने मंत्री से सभी योग्य पुरुषों की परीक्षा लेकर अपना तर्क सिद्ध करने का आदेश दिया। मंत्री ने अगले दिन राज्य के 20 सबसे योग्य व्यक्तियों को एक मैदान में बुलाया। एक 8 फुट गहरा एवं 8 फुट चौड़ा गड्ढा मंत्री ने खुदवाया और सभी को गड्ढे में उतार दिया। मंत्री ने राजा की उपस्थिति में सभी 20 योग्य व्यक्तियों के समक्ष घोषणा करी, "जो भी आप 20 में से इस गड्ढे से सबसे पहले निकलकर आयेगा। राजा जी उसे राज्य का चौथाई हिस्सा पुरस्कार के रूप में देंगे।" मंत्री की घोषणा सुनकर सभी गड्ढे से बाहर निकलने का प्रयास करने लगे। जो भी सबसे आगे निकलता बाकि सब उसे पीछे खींच लेते। इस प्रकार सभी घंटों तक लगे रहे मगर अंत में सभी थक कर बेहोश हो गये। सफलता किसी को नहीं मिली। राजा को बड़ा अचरज हुआ। मंत्री ने कहा, "राजन्! अगर इन सभी में एकता होती, परस्पर ईर्ष्या और द्वेष न होता, तो ये एक दूसरे का सहयोग कर किसी एक को विजेता बना सकते थे। मगर आपसी तालमेल की कमी के चलते सभी प्रतियोगिता में हार गये।"

भारत देश की पिछले 5000 वर्षों में जो दुर्गति हुई हैं, उसका कारण भी यही एकता की कमी, परस्पर ईर्ष्या और द्वेष का होना है। महाभारत के काल में पांडव और कौरव के मध्य एकता की कमी के चलते महायुद्ध हुआ जिसका परिणाम देश शक्तिहीन हो गया। कालांतर में विदेशी हमलावरों के समक्ष स्वदेशी राजा योग्य एवं अधिक शक्तिशाली होते हुए भी परस्पर ईर्ष्या और द्वेष के चलते हार गये।

ऋग्वेद का अंतिम सूक्त संगठन सूक्त कहलाता है। इस सूक्त का दूसरा मंत्र इस प्रकार है–

ओ३म् सगंच्छध्वं सं वदध्वं सं वो मनांसि जानताम्।
देवा भागं यथा पूर्वे सं जानानां उपासते॥

इस मंत्र का अर्थ है–हे स्तोताओ! तुम परस्पर एक विचार से मिलकर रहो; परस्पर मिलकर प्रेम से वार्तालाप करो। तुम लोगों का मन समान होकर ज्ञान प्राप्त करें। जिस प्रकार पूर्व में लोग एक मत होकर ज्ञान संपादन करते हुए सेवनीय ईश्वर की उत्तम प्रकार से उपासना करते हैं। उसी प्रकार तुम भी एकमत होकर अपना कार्य करो और धनादि संपन्नता ग्रहण करो।

वेद परस्पर मिलकर विचार करने, प्रेम से वार्तालाप करने, समान मन करने, ज्ञान प्राप्त करते हुए ईश्वर की उपासना करने का संदेश दे रहे हैं जिससे मानव जाति समुचित प्रगति करे।

अगर भारत देशवासियों ने वेद के 'संगठन मंत्र' का पालन किया होता, तो देश कभी विदेशी आक्रान्ताओं का गुलाम नहीं बनता और सदा विश्वगुरु बना रहता।

प्रेरक वचन

- खुश रहने का सबसे अच्छा तरीका किसी दूसरे को खुश करना है।
- असल दोष यह है कि दोषों को सुधारने की कोशिश ही न की जाए।
- हम खुश होने के कारण नहीं हंसते, बल्कि हंसने के कारण खुश होते हैं।
- लोगों में शक्ति की नहीं, इच्छाशक्ति की कमी है।
- अंधेरे की शिकायत करने से बेहतर है मोमबत्ती जलाना।
- निरन्तर परिश्रम ही सफलता की कुंजी है।
- व्यावहारिकता के नाम पर आदर्शों की बलि देना अनुचित है।

संकलन–भलेराम आर्य, गांव सांघी, जिला रोहतक, मो० 9416972879

हमारा यह संसार तीन अनादि व नित्य सत्ताओं की देन है

❑ मनमोहन कुमार आर्य, 196 चुक्खूवाला-2, देहरादून-248001, मो० 9412985121

हमारा यह जगत् सूर्य, चन्द्र, पृथिवी सहित अनेक ग्रह व उपग्रहों से युक्त है। इस समस्त सृष्टि में हमारे सौर्य मण्डल के समान अनेक वा अनन्त सौर्य मण्डल हैं। इतने विशाल जगत् को देखकर जिज्ञासा होती है कि यह संसार किससे, क्यों, कैसे व कब अस्तित्व में आया और इसका भविष्य क्या है? हमारे पूर्वजों ने इन सभी प्रश्नों पर विचार किया था और उनके उत्तर भी उन्होंने प्राप्त किये थे। यह उत्तर हमें वैदिक साहित्य वा ऋषि दयानन्द के अमरग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश का अध्ययन कर प्राप्त होते हैं। प्रत्येक मनुष्य का कर्तव्य है कि वह इन प्रश्नों की जिज्ञासा करे और इनके उत्तर जानकर उन्हें आने वाली पीढ़ियों को प्रदान करे जिससे सभी मनुष्य अपने कर्तव्य व लक्ष्य का बोध प्राप्त कर उनके अनुसार अपना जीवन व्यतीत करते हुए उन्हें प्राप्त होकर अपने जीवन को सफल कर सकें और अकर्तव्य-कर्मों को करने से बच कर उनके परिणाम दु:खों से भी बच सकें। ऐसा करके ही हम अपने मनुष्य जीवन वा मनुष्य को परमात्मा से प्राप्त हुई बुद्धि का सदुपयोग कर अपनी आत्मा व जीवन की रक्षा कर सकते हैं और अपने दु:खों को दूर कर दूसरों को भी दु:खों से रहित सन्मार्ग का ज्ञान करा सकते हैं।

वेद संसार में तीन अनादि सत्ताओं का होना बताते हैं। यह सत्तायें हैं ईश्वर, जीव और प्रकृति। इन तीन सत्ताओं से ही यह संसार बना है व चल रहा है। इनमें से यदि एक सत्ता का भी अभाव होता तो यह संसार न तो बन सकता था न ही यह सृष्टि चल सकती थी। ईश्वर संसार को बनाने व चलाने वाला है। जिसके लिये संसार बनाया गया है वह "जीव" नामी अनादि व नित्य सत्ता है। जिस पदार्थ से यह संसार बना है वह जड़ प्रकृति है जो सूक्ष्म एवं सत्त्व, रज व तम गुणों वाली त्रिगुणात्मक प्रकृति कहलाती है। यह ज्ञान ईश्वर ने वेदों में कराया है और जिन ऋषियों ने अपने उपदेशों व दर्शन आदि ग्रन्थों द्वारा इसका प्रचार किया है वह भी उन्होंने वेदों सहित अपनी ईश्वर उपासना, चिन्तन-मनन तथा आपसी चर्चा से प्राप्त किया था। इन तीन सत्ताओं का विस्तृत ज्ञान भी वेदों में प्राप्त होता है। हमारी यह सृष्टि 1.96 अरब वर्ष पूर्व अस्तित्व में आई है। सृष्टि के आरम्भ में अमैथुनी सृष्टि हुई थी जिसमें अनेक स्त्री व पुरुष परमात्मा द्वारा युवा अवस्था में उत्पन्न किये गये थे। इन स्त्री पुरुषों को मनुष्यों की सभी शंकाओं का समाधान करने वाले ज्ञान की

आवश्यकता थी जिसे ईश्वर ने चार ऋषियों अग्नि, वायु, आदित्य और अंगिरा को उत्पन्न कर प्रदान कराया था। वेदोत्पत्ति का प्रकरण ऋषि दयानन्द ने अपने अनुसंधान एवं विवेक से अपने अमरग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश एवं ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका में प्रस्तुत किया है। वहां इसे देखा जा सकता है और इस विषयक अपनी सभी भ्रान्तियां दूर की जा सकती हैं। यह ऐसा ज्ञान है जिसे जान लेने से मनुष्य को अपने जीवन में लाभ होता है। जिस मनुष्य को इस विषय का ज्ञान नहीं है, उसका मनुष्य जीवन प्राप्त करना पूरी तरह सार्थक नहीं कहा जा सकता। मनुष्य को जन्म ज्ञान प्राप्ति और ज्ञान के अनुसार कर्म करने के लिये ही मिला है। ज्ञान से ही मनुष्य को जन्म व मरण के आवागमन चक्र से मुक्ति प्राप्त होती है। मुक्ति दु:खों व जन्म-मरण से होती है, जिसके लिये वेद व वैदिक साहित्य के अध्ययन व अभ्यास के अतिरिक्त मनुष्य के पास अन्य कोई साधन नहीं है। अत: संसार के सभी मनुष्यों को वेद व वैदिक साहित्य की शरण में आकर अपने जीवन के यथार्थ रहस्य व उसके धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष की प्राप्ति के विषय में ज्ञान अर्जित करना चाहिये। सभी ऋषि मुनि, ज्ञानी व ध्यानी तथा योगी इसी वैदिक जीवन को जीते थे तथा अपने अभीष्ट मुक्ति पथ के पथिक बन कर आत्मा के लक्ष्य ज्ञानोन्नति, दु:खनिवृत्ति तथा मोक्ष को प्राप्त करते थे।

ईश्वर संसार की सर्वोत्तम, प्रमुख; सृष्टि को रचने व इसका पालन करने वाली सत्ता है। वेदों के अनुसार इसका स्वरूप, गुण, कर्म व स्वभाव बताते हुए ऋषि दयानन्द ने कहा है कि ईश्वर सच्चिदानन्दस्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान्,

न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्ता है। इस स्वरूप वाले सत्तावान ईश्वर की ही सब मनुष्यों को स्तुति, प्रार्थना व उपासना करनी चाहिये। ईश्वर से इतर कोई मनुष्य, महापुरुष व सत्ता मनुष्य के लिये ईश्वर के समान उपासनीय व पूजनीय नहीं है। ईश्वर की उपासना से जो लाभ प्राप्त होते हैं वह अन्य किसी आचार्य व सन्देशवाहक की उपासना, उनके प्रति श्रद्धा व आज्ञा पालन से नहीं होते। इसका विस्तृत अध्ययन भी ऋषि दयानन्द के सत्यार्थप्रकाश आदि ग्रन्थों से किया जा सकता है। ऋषि दयानन्द ईश्वर के विषय में लिखते हैं कि ईश्वर वह है जो सब दिव्य गुण, कर्म, स्वभाव, सब विद्याओं से युक्त और जिसमें पृथिवी सूर्यादि सब लोक स्थित हैं। ईश्वर आकाश के समान व्यापक है और सब देवों का देव है। उस परमेश्वर को जो मनुष्य न जानते न मानते और उस का ध्यान नहीं करते वे नास्तिक मन्दमति सदा दु:खसागर में डूबे ही रहते हैं। इसलिये सर्वदा उसी को जानकर सब मनुष्य सुखी होते हैं। ऋषि दयानन्द ने यह भी बताया है कि संसार में ईश्वर केवल एक ही है अर्थात् एक से अधिक ईश्वर नहीं हैं। देवताओं के विषय में ऋषि दयानन्द ने बताया है कि देवता दिव्य गुणों से युक्त जड़ च चेतन पदार्थों यथा अग्नि, वायु, जल, आकाश व पृथिवी आदि को कहते हैं। हमारे माता, पिता, आचार्य व गुरु आदि भी देव कहलाते हैं। गो, अश्व आदि पशुओं से मनुष्यों का उपकार होता है अत: यह प्राणी भी देव की श्रेणी में आते हैं। ईश्वर देव और महादेव भी है। महादेव केवल एक सच्चिदानन्दस्वरूप ईश्वर ही होता है। जड़ व चेतन देवों सहित परमात्मा से मनुष्यों को यथायोग्य उपकार लेना चाहिये परन्तु कोई भी जड़ पदार्थ वा देवता ईश्वर के समान उपासनीय व ध्यान से समाधिष्ठ होने के योग्य नहीं है। कोई भी जड़ देवता हमारी किसी प्रार्थना को अनुभव नहीं कर सकते और न ही उसे पूरा कर सकते। यह काम ईश्वर की उपासना से ही होता है। इस विषय को विस्तार से ऋषि दयानन्द के सभी ग्रन्थों का अध्ययन कर जाना जा सकता है।

ईश्वर से इतर दूसरी मुख्य सत्ता "जीव" है। यह जीव चेतन गुण वाली सत्ता है जिसमें स्वाभाविक रूप से आनन्द का अभाव है। जीव में आनन्द ईश्वर के सान्निध्य से प्राप्त होता है। इसके लिये मनुष्य योनि में होते हुए वह जीव उपासना कर ईश्वरीय आनन्द को प्राप्त कर सकता है। भौतिक पदार्थों से इन्द्रियों के द्वारा मनुष्य सुख की अनुभूति कर सकते हैं परन्तु इन्द्रिय सुख एवं ईश्वर के आनन्द में अन्तर है। ईश्वर के आनन्द के समान संसार का कोई सुख नहीं है। ईश्वर का आनन्द अनुभव की वस्तु है जिसे योगी ध्यान व समाधि की अवस्था में ही अनुभव करते हैं। हम इसे ऋषियों के ग्रन्थों के आधार पर कह रहे हैं। अत: ईश्वर के आनन्द की प्राप्ति के लिये प्रत्येक मनुष्य को ऋषि प्रणीत वैदिक सन्ध्या प्रतिदिन प्रात: व सायं करनी चाहिये। इससे आत्मा में उत्तरोत्तर ईश्वर के ज्ञान का प्रकाश बढ़ता जायेगा और आनन्द की उपलब्धि भी होगी। जीव के विषय में ऋषि दयानन्द सत्यार्थप्रकाश के सप्तम समुल्लास में लिखते हैं कि ईश्वर व जीव दोनों चेतनस्वरूप हैं। दोनों का स्वभाव पवित्र, अविनाशी और धार्मिकता आदि है। परमेश्वर के सृष्टि की उत्पत्ति, स्थिति, प्रलय, सब को नियम में रखना, जीवों को पाप पुण्यों के फल देना आदि धर्मयुक्त कर्म हैं। जीव के सन्तानोत्पत्ति, उन का पालन, शिल्पविद्या आदि अच्छे बुरे कर्म हैं। ईश्वर में नित्यज्ञान, आनन्द, अनन्त बल आदि गुण जीव से अतिरिक्त हैं। ऐसी संसार की दो अनादि सत्तायें ईश्वर व जीव हैं।

जीव के लक्षण व सत्ता पर प्रकाश डालते हुए ऋषि ने बताया है कि जीव में पदार्थों की प्राप्ति की अभिलाषा, दु:खादि की अनिच्छा, वैर, पुरुषार्थ, बल, सुख व आनन्द, दु:ख, विलाप अप्रसन्नता, विवेक, पहिचानना ये गुण-दोष हैं। इसके अतिरिक्त प्राण वायु को बाहर निकालना, प्राण को बाहर से भीतर को लेना, आंख को मींचना, आंख को खोलना, प्राण का धारण करना, निश्चय, स्मरण और अहंकार करना, चलना, सब इन्द्रियों को चलाना, भिन्न-भिन्न क्षुधा, तृषा, हर्ष, शोकादियुक्त होना, ये जीवात्मा के गुण हैं। जीवात्मा के यह गुण परमात्मा से भिन्न हैं। इन गुणों से ही जीवात्मा की प्रतीती होती है। यह भी जानना चाहिये कि जीवात्मा स्थूल नहीं है। जब तक आत्मा देह में होता है तभी तक यह गुण देह में प्रकाशित रहते हैं और जब शरीर छोड़ कर चला

शेष पृष्ठ 13 पर....

हमारा प्रतिनिधि कैसा हो.... पृष्ठ 4 का शेष.....

पास जाना पड़ता है। जो बिना भेदभाव के हमेशा सबके कार्यों को करने के लिए उद्यत रहे, उसी को जनता का सच्चा प्रतिनिधि कहा जा सकता है। सहानुभूतिशील व्यक्ति में ही जनतन्त्र के दो मुख्य गुण–जनसम्पर्क और जनसेवा होते हैं। इसका एक सुन्दर परीक्षण गत निर्वाचन के समय अम्बाला में हुआ।

निर्वाचन के दिनों में कुछ मतदाता मिलकर रात को पहले एक प्रत्याशी के पास गये और उससे निवेदन किया कि हमारे पड़ोस के एक निरपराध व्यक्ति को झूठी शिकायत पर पुलिस वाले पकड़कर थाने में ले गये हैं। अत: हमारे साथ थाने चलिए। उससे कहा–अब रात हो गई है, प्रात:काल आइए, मैं आपके साथ थाने चलूँगा। तब वे दूसरे प्रत्याशी के पास पहुँचे। उसने भी बात सुनने के बाद बहाना बनाकर टाल दिया। जब वे सारे तीसरे के पास पहुँचे और वह बात सुनते ही सोने वाले वस्त्रों में ही उनके साथ चल पड़ा तब एक ने कहा, 'आप वस्त्र तो बदल लें।' उसने उत्तर दिया, 'वस्त्रों की कोई बात नहीं, पहले दु:खी की मौके पर सहायता होनी चाहिए।' तब उन्होंने सच्चाई बताकर धन्यवाद पूर्वक पूर्ण समर्थन का आश्वासन दिया। तभी तो अयोध्यासिंह उपाध्याय ने कहा–

जो हो राजा और प्रजा दोनों का प्यारा,
जिसका बीते देश-प्रेम में जीवन सारा।
देश हितैषी हमें चाहिए अनुपम ऐसा,
बहे देशहित की जिसकी नस-नस में धारा॥

प्रजातन्त्र राजनीति की असली जड़ यही है कि उसके प्रतिनिधि का जनता के साथ सीधा सम्बन्ध हो। वह उनके सुख-दु:ख में सहानुभूतिशील हो, आप भी उन जैसी परिस्थितियों में जीवन बिताये, न कि अलग-थलग रहकर। अत: प्रजातन्त्र की जड़-जनसंपर्क, जन-सेवा और जीवन-व्यवहार में ही है।

इसलिए हमें वही प्रत्याशी अपने प्रतिनिधि के रूप में निर्वाचित करना चाहिए, जिसके जीवन और व्यवहार में उपर्युक्त गुण हों। अयोग्य, भ्रष्ट, संविधान के प्रति अनादर की भावना रखने वाला, सामाजिक मर्यादाओं का उल्लंघन करने वाला, केवल अपना उल्लू ही साधने वाला और जनसंपर्क एवं जनसेवा से शून्य प्रत्याशी को किसी भी परिस्थिति में कभी भी अपना प्रतिनिधि नहीं चुनना चाहिए। जो शराब (पिला), धन (दे) और जात-बिरादरी जैसे प्रलोभन देकर अपनी ओर आकर्षित करे, उसको तो कभी भी अपना प्रतिनिधि नहीं बनाना चाहिए। अत: मतदाताओ! आओ, जागो और मिलकर प्रतिज्ञा करो कि हमारा प्रतिनिधि केवल योग्यतम प्रत्याशी ही होगा।

शोक-समाचार

बड़े दु:ख के साथ सूचित किया जाता है कि आर्यसमाज भालौठ जिला रोहतक के पूर्व प्रधान श्री अजीत सिंह शास्त्री जी की धर्मपत्नी श्रीमती अंगूरी देवी 29 अगस्त, 2023 को अपनी सांसारिक जीवनयात्रा पूरी करके परमात्मा की व्यवस्था के अनुसार प्रभुचरणों में विलीन हो गई हैं। वे 69 वर्ष की थी। वे पिछले आठ वर्षों से फेफड़े के कैंसर से पीड़ित थी तथा मेदान्ता गुरुग्राम अस्पताल में उपचाराधीन थी। भयंकर रोग से पीड़ित होने पर भी उन्होंने अपने मनोबल को गिरने नहीं दिया।

आर्य परिवार में वे बड़ी मेहनती, ईमानदार, धार्मिक, सामाजिक कार्यों में रुचि रखने वाली महिला थी। उन्होंने आर्यसमाज के सिद्धान्तों और नियमों के आधार पर अपने परिवार का पालन-पोषण और वर्धन किया। धार्मिक और सामाजिक कार्यों में बढ़-चढ़कर भाग लेकर और अपने सास-ससुर की दिन-रात सेवा करके दूसरी नारियों के लिए भी एक उदाहरण प्रस्तुत किया। वे अपने पीछे पति, पुत्र-पुत्रियों और पौत्रों से भरे पूरे परिवार को छोड़कर गई हैं। आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के सभी अधिकारीगण प्रभु से कामना करते हैं कि दिवंगत आत्मा को सुख-शान्ति मिले व परिवार को यह दु:ख सहन करने की शक्ति और सामर्थ्य प्राप्त हो। संपादक

हमारा यह संसार तीन.... पृष्ठ 11 का शेष.....

जाता है तब ये गुण शरीर में नहीं रहते। जिसके होने से जो हों और न होने से न हों वे गुण उसी (प्रस्तुत प्रकरण में आत्मा) के होते हैं। जैसे दीप और सूर्यादि के न होने से प्रकाशादि का न होना और होने से होना है, वैसे ही जीव और परमात्मा का ज्ञान व विज्ञान इनके गुणों द्वारा होता है।

जगत् में तीसरा पदार्थ है प्रकृति। प्रकृति को ऋषि दयानन्द जी ने सांख्य सूत्रों के आधार पर वर्णित किया है। वह लिखते हैं कि सत्त्व वा शुद्ध, रज: अर्थात् मध्य तथा तम: अर्थात् जाड्य यह तीन वस्तु मिलकर जो एक संघात है उस का नाम प्रकृति है। उस प्रकृति से महतत्त्व बुद्धि, उस से अहंकार, उस से पांच तन्मात्रा सूक्ष्म भूत और दश इन्द्रियां तथा ग्यारहवां मन, पांच तन्मात्राओं से पृथिवी आदि पांच भूत ये (तेईस), चौबीस और पच्चीसवां पुरुष अर्थात् जीव और परमेश्वर हैं। इनमें से प्रकृति अविकारिणी और महतत्त्व अहंकार पांच सूक्ष्म भूत प्रकृति का कार्य और इन्द्रियां मन तथा स्थूलभूतों का कारण हैं। पुरुष न किसी की प्रकृति, न उपादान कारण और न किसी का कार्य है।

हमारा यह संसार प्रकृति नामी जड़ पदार्थ से बना है। बनाने वाला परमात्मा है तथा जिसके लिये बनाया गया है वह ''जीव'' हैं। सृष्टि की रचना लगभग दो अरब वर्ष पूर्व हुई और इस समय मनुष्योत्पत्ति का काल 1,96,08,53,123 वर्ष व्यतीत हुआ है। यह सृष्टि प्रवाह से अनादि है अर्थात् अनादि काल से यह सृष्टि प्रकृति नामी उपादान कारण से बनती आ रही है और सर्गकाल की समाप्ति पर परमात्मा इसको इसके कारण मूल प्रकृति में विलीन कर देता है। प्रलय की अवधि पूर्ण होने पर पुन: सृष्टि की रचना होती है। इस प्रकार सृष्टि उत्पत्ति, स्थिति तथा प्रलय का यह कार्य अनादि काल से चल रहा है तथा अनन्त काल तक चलता रहेगा। जीव अपने अपने कर्मों के अनुसार अनेक प्राणी योनियों में जन्म लेकर सुख व दु:ख पाते रहेंगे और वेदानुसार जीवन व्यतीत करने सहित ईश्वर का साक्षात्कार कर मोक्ष व मोक्ष के बाद पुन: जन्म प्राप्त करते रहेंगे। सभी मनुष्यों को इन रहस्यों को जानना चाहिये तभी मनुष्य जीवन की सार्थकता है।

हमने संक्षेप में सृष्टि के तीन अनादि पदार्थों की चर्चा की है। पाठक मित्रों से निवेदन है कि वह सत्यार्थप्रकाश ग्रन्थ के सप्तम, अष्टम तथा नवम समुल्लास को पढ़कर सृष्टि के रहस्यों को विस्तार से जानें और अपने कर्तव्यों सहित मनुष्य जीवन के प्रमुख लक्ष्य मोक्ष, उसकी प्राप्ति के उपायों व साधनों को भी जानें।

क्या महाभारत में मन्त्र हैं?.. पृष्ठ 8 का शेष...

दूँगा।'' भोज, वृष्णि और अन्धक वंश के समस्त वीरों ने उन्हीं का अनुसरण किया। केवल एक कृष्ण थे, जिन्होंने अर्जुन का समर्थन किया था। अर्जुन का गुण, गौरव व बल, पराक्रम बताकर कृष्ण ने सबको शान्त किया था। सम्भवत: बाद तक भी बलराम और दूसरे यादव इस बात को पचा न पाये हों। इसीलिए महाभारत युद्ध में बलराम ने पाण्डवों का साथ नहीं दिया, पर वे कृष्ण के विरुद्ध (दुर्योधन के पक्ष में) भी नहीं लड़ सके। जब भीम ने दुर्योधन की जांघ पर गदा मारकर उसे गिरा दिया, तो बलराम वहाँ पहुँच गये और इसे नियम का उल्लंघन बताकर क्रोधित हो भीम को मारने के लिए दौड़ पड़े थे (शल्यपर्व, 60-9)। वहाँ भी श्रीकृष्ण ने उन्हें दुर्योधन के अत्याचार (अभिमन्यु वध आदि) बताकर बड़ी मुश्किल से शान्त किया था।

यदि महाभारत का लेख सत्य है, तो हमें नहीं भूलना चाहिए कि मद्यपान निषेध करने पर भी बलराम सहित कृतवर्मा, सात्यकि, गद, बभ्रु आदि यादव श्रीकृष्ण के सामने ही शराब पीने लगे थे (मौसल पर्व, 3-16)। ध्यान देने योग्य बात यह भी है कि यदुओं के विनाश के समय भी यादवों के राजा उग्रसेन थे (मौसल, 2-27), श्रीकृष्ण नहीं। फिर वे महाभारत युद्ध के समय यादवी नारायणी सेना दुर्योधन को कैसे दे सकते थे? **क्रमश: अगले अंक में....**

आवश्यक सूचना

'आर्य प्रतिनिधि' पाक्षिक के सभी ग्राहकों को सूचित किया जाता है कि जिन ग्राहकों का जो भी बकाया शुल्क बनता है, वह बकाया शुल्क सभा कार्यालय में जमा करें या मनीऑर्डर द्वारा भेजने का कष्ट करें ताकि हम आपकी पत्रिका समय पर भेजते रहें। शुल्क भेजते समय आप ग्राहक संख्या व मोबाइल नंबर अवश्य लिखें।

–रघुवरदत्त, पत्रिका लिपिक, मो० 7206865945

आचार्य आनन्द पुरुषार्थी, अन्तर्राष्ट्रीय वैदिक मिशनरी की सुन्दर देश मॉरीशस से एक चिट्ठी

ईश्वर कृपया अत्र कुशलं तत्रास्तु।

मुंबई से एयर इंडिया के विमान द्वारा 29 जुलाई को प्रात:काल 7-15 पर हम पोर्ट लुईस पहुँचे। ये हमारी सत्रहवीं विदेश यात्रा है। 18 अगस्त को मॉरीशस के महामहिम राष्ट्रपति श्री पृथ्वीराज सिंह जी रूपन एवं आपकी धर्मपत्नी श्रीमती संयुक्ता जी से राष्ट्रपति भवन में मिलकर उन्हें अंग्रेजी का सत्यार्थप्रकाश, मनुस्मृति आध्यात्मिक साहित्य भेंट किया। वेद समाज राष्ट्र मनुस्मृति के बारे में महामहिम ने दीर्घकाल तक चर्चा की। समाज व देश की बुराइयों को दूर करने के लिये आर्यसमाज को अधिक गतिशील रहने का आग्रह आप कर रहे थे। महर्षि दयानंद जी की द्विजन्म शताब्दी पर भारत के अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन 2025 में हमने आपको आमंत्रित किया। भारत की राजदूत Indian High Commissioner श्रीमती के० नंदिनी सिंगला जी से एक शिष्टमंडल के साथ जाकर मुलाकात की तथा वैदिक साहित्य भेंट किया। आपकी रुचि देखकर लगभग एक घंटे तक हमने वैदिक त्रैतवाद व कर्म सिद्धांत पर चर्चा की। जुलाई 2008 व अगस्त 2010 में हम मॉरीशस वेदप्रचारार्थ आ चुके है। तब भी तत्कालीन राष्ट्रपति जी से मिलकर विचार विमर्श किये थे।

दक्षिण अफ्रीका महाद्वीप में हिंद महासागर के दक्षिण पश्चिम में स्थित मॉरीशस को अमेरिकी लेखक मार्क ट्वेन ने स्वर्ग सदृश बताया था। दिल्ली मुंबई के संयुक्त क्षेत्रफल के बराबर 2040 वर्ग किलोमीटर का ये सुंदर-सा देश है। 1598 में हालैंड के डचों ने इस निर्जन द्वीप पर कदम रखा अपने युवराज मोरिस के नाम पर नामकरण कर दिया। 1638 में स्थायी बस्ती बसा दी। 1715 में फ्रांस और बाद में ब्रिटिश अंग्रेजों ने कब्जा कर लिया । 12 मार्च 1968 को श्री शिवसागर रामगुलाम जी के नेतृत्व में बिना बलिदान के इसे स्वतंत्रता प्राप्त हुई। समुद्री सीमा 150 किलोमीटर है। आस-पास 49 निर्जन द्वीपसमूह हैं। देश की जनसंख्या 14 लाख है, जिनमें 49 प्रतिशत हिंदू, 30 प्रतिशत ईसाई, 18 प्रतिशत मुस्लिम, 4 प्रतिशत नास्तिक व अन्य हैं। अफ्रीकी देशों व भारत के बिहार, बंगाल, आंध्र, महाराष्ट्र उत्तर-प्रदेश आदि प्रांतों से अंग्रेजों ने 1834 से हजारों मजदूरों को अनुबंध करके लाये। उनकी ही छटवीं पीढ़ी संपत्ति उच्च शिक्षित हो देश को संभाल रही है। ब्रिटिश सेना के कुछ हिंदू सैनिकों से आर्यसमाज की विचारधारा 1897 में यहाँ आई। 1963 मे प्रथम आर्यसमाज बना। स्त्रीशिक्षा, अंधविश्वास निर्मूलन, देश स्वातन्त्र्य, पंचयज्ञ परंपरा सहित राष्ट्र उत्थान में आर्यों ने अद्भुत भूमिका निभाई है। तीन सभाओं के अन्तर्गत 600 आर्य मंदिर देश में कार्य कर रहे हैं। लगभग ढाई लाख आर्य अनुयायी कहे जा सकते हैं।

जनवरी में इंदौर प्रवासी सम्मेलन में आर्यजन मिले थे तब ही हमारी इस यात्रा की भूमिका बन गई थी। 23 दिनों के स्वल्प प्रवास में पूरे देश के विभिन्न अंचलों में हमारे 18 यज्ञोपदेश, आकाशवाणी में 16 दूरदर्शन पर 7 व्याख्यान रिकार्ड किये गये ये अक्टूबर तक प्रसारित होते रहेंगे। अन्यत्र पंडित-पंडिताओं को योगदर्शन के गूढ़ सूत्रों को पढ़ाया। एक यज्ञ में देश की उपप्रधानमंत्री श्रीमती लीलादेवी जी एक अन्य यज्ञ में सांसद सुश्री सुभाषिणी लक्ष्मणराय जी ने आहुतियाँ प्रदान कीं। वेदमंत्रों या नीतिकार के श्लोकों के आधार पर सिद्धांतों के प्रतिपादन करने के साथ मांसाहार, अव्यवस्थित दिनचर्या व अंधविश्वास खंडन का प्रयास तो हम किये, लेकिन अभी बहुत कार्य करना आवश्यकीय है।

9 जिलों में 336 ग्राम हैं। भारत सरकार पुत्रवत् मानकर शिक्षा स्वास्थ्य मेट्रो आदि के लिये करोडों रुपये का सहाय कर चुकी है व करती है। गंगा तालाब, मेरिन सफारी, सात प्रकार की मिट्टी, 108 फीट की दुर्गा जी व शिवजी की प्रतिमा, ज्वालामुखी, वाटनिकल गार्डन में सैकड़ों वृक्ष, विशालकाय कछुआ, सफेद कमल, समुद्र तट मछलीघर आदि दर्शनीय है। एक सुयोग्य गुरुकुलीय स्नातक को अन्यत्र आर्य उच्च वेतनमान पर नियुक्त करना चाहते हैं। 21 अगस्त को नैरोबी होते हुए हम दुबई जा रहे हैं अगला पत्र वहीं से लिखेंगे। सभी को नमस्ते कहें।

-आचार्य आनंद पुरुषार्थी, अन्तर्राष्ट्रीय वैदिक मिशनरी, मोबाइल +91-7987372305

महिला अधिकारों एवं शराबबन्दी आन्दोलन की प्रबल समर्थक योद्धा नेत्री बहन दर्शना देवी (नाहरी) का असामयिक निधन

दिनांक 17 अगस्त, 2023 को सोनीपत में बहन दर्शना देवी धर्मपत्नी श्री वीरेन्द्र सिंह दहिया (नाहरी) का असामयिक निधन हो गया। कैंसर जैसे पीड़ादायक रोग के होते हुए भी उन्होंने कभी अपने होठों की स्वाभाविक मुस्कान को आखिरी श्वास तक ओझल नहीं होने दिया। बहन दर्शना देवी का जन्म 8 जून 1960 को गांव भैंसवाल कलां तहसील गोहाना जिला रोहतक में हुआ था। इनके पिता का नाम रिछपाल सिंह व माता का नाम सरूपी देवी था। दर्शना जी का सौभाग्य था कि वह ऐसे गांव में पैदा हुई जो आर्यसमाज के कारण शिक्षा व संस्कारों की दृष्टि से पूरे पंजाब प्रान्त में एक नम्बर पर था। भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति के संस्कार दर्शना जी में हर समय झलकते रहते थे। दर्शना जी का विवाह गांव नाहरी (सोनीपत) में वीरेन्द्र सिंह दहिया सुपुत्र श्री रणसिंह से 1978 में हुआ। वीरेन्द्र सिंह के दादा जी मा० सुरजा क्षेत्र में अपनी सामाजिक पहचान रखते थे। दर्शना जी को वीरेन्द्र सिंह की माता शान्तिदेवी का प्यार अपनी माँ की तरह मिला, जिनके मैंने (महेन्द्र सिंह शास्त्री) ने भी बचपन-तीसरी कक्षा 1966 में मेरे गांव कतलूपुर में पढ़ते हुए दर्शन किये थे। वीरेन्द्र दहिया दिल्ली में लेडी हार्डिंग मैडिकल के कलावती हॉस्पीटल की लैब में कार्यरत रहे हैं। बहन दर्शना व वीरेन्द्र सिंह दहिया से मेरा पहला सम्पर्क अप्रैल, सन् 1985 में हुआ जब गांव में शराब ठेके पर धरना चल रहा था। उस समय तक बहन दर्शना **'महिला सांस्कृतिक संघ'** की सक्रिय कार्यकर्त्री बन चुकी थीं। इससे पहले महिलाओं का शराब ठेके पर धरने में शामिल होना असम्भव कार्य माना जाता था, लेकिन नाहरी गांव में जब महिलाओं ने पहली बार घूंघट (पर्दाप्रथा) हटाकर चौपाल में चढ़कर शराब के ठेके के खिलाफ बैठक की, जिसकी गूंज अखबारों (प्रिंट मीडिया) के माध्यम से पूरे देश में गई। इस साहसिक कार्य का श्रेय बहन दर्शना के साथ गांव ही की दो और महिलाएं कांता और सतवन्ती देवी को भी जाता है, जिन्होंने दिन-रात एक करके दर्जनों गांवों की महिलाओं को अबला से वीरांगना बनाकर खड़ा कर दिया। भविष्य में इसका परिणाम यह हुआ कि शराब के विरुद्ध होने वाले धरनों व अन्य आन्दोलनों में भी महिलाओं की भागीदारी बढ़ गई। बहन दर्शना व अन्य महिलाओं में यह अन्तर था, क्योंकि दर्शना के पति वीरेन्द्र सिंह दहिया स्वयं एक समर्पित एवं जुझारू प्रदेश स्तर के नेता रहे हैं। इसके बाद जहां-जहां भी प्रदेश में शराब व महिलाओं के उत्पीड़न के खिलाफ धरना व प्रदर्शन होता था वहां बहन दर्शना व वीरेन्द्र सिंह पहुंच जाते थे। दर्शना जी ने महिलाओं को प्रभावित करने की अनोखी कला थी, जिसके परिणाम स्वरूप धरनों पर महिलाओं की संख्या अपार भीड़ में बदल जाती थी, जिसका उदाहरण फिरोजपुर बांगर, हसनगढ़, कतलूपुर (सोनीपत), माकड़ौला, झाड़सा, भौंडसी, धर्मपुर (गुरुग्राम) शराब के ठेकों पर दर्शना जी की भागीदारी रही।

इसके दौरान प्रदेश स्तर पर बहन बीरमती (दौलताबाद), प्रो० नीलिमा दहिया (रोहतक), कांता कौशिक (बहादुरगढ़), जगमती सांगवान (रोहतक), शीला देवी धर्मपुर, भतेरी देवी दहिया धनवानपुर (गुरुग्राम) आदि महिलाओं का योगदान भी इस संघर्ष में भुलाया नहीं जा सकता है। दर्शना जी को ईश्वर ने जहां सुन्दर स्वास्थ्य दिया उससे भी बढ़कर उनमें मानवीय गुण समाहित थे। दर्शना जी की तीन बेटियां हैं, जो उच्च शिक्षित हैं, डॉ० स्मिता, दीपाली व श्वेता। कैंसर के असहनीय कष्ट के बाद भी सामान्य स्थिति में रहना ही योगमुद्रा है। योगिराज श्रीकृष्ण ने कहा है-**'सुख-दुःखे समे कृत्वा'** जो व्यक्ति अपने व्यावहारिक जीवन में सुख आने पर फूलकर कुप्पा नहीं होता और दुःख आने पर धैर्य धारण रखता है वह महान्, पहुंचा हुआ एवं विशेष व्यक्तित्व ही होता है। दर्शना जी के जीवन में कदम-कदम पर यह व्यवहार झलकता है। ऐसी महान् और दिव्य आत्माएं संसार में आकर परोपकारमय जीवन से हजारों-लाखों लोगों को प्रभावित कर जाती हैं। 27 अगस्त 2023 को बहन दर्शना जी की स्मृति में प्रेरणा सभा का आयोजन 11 बजे अग्रवाल धर्मशाला (गुड़मण्डी) सोनीपत में किया गया जिसमें सैकड़ों महिला-पुरुषों ने भागीदारी की। प्रेरणा सभा में अनेक वक्ताओं ने दिवंगत दर्शना जी के संस्मरण सुनाये, जिनमें विशेषकर स्वामी नित्यानन्द (महेन्द्र सिंह शास्त्री), वीरेन्द्र दहिया, का० सत्यवान रोहतक, का० राजेन्द्र सिंह एडवोकेट, जयवीर गहलावत, यशवीन्द्र लोचब, रीतू व बबीता यादव, का० अनूपसिंह, कैलाशचन्द्र, बेटी डॉ० स्मिता, तरुण कुमार सिहाग, वकील भारत भूषण, वकील जितेन्द्र कुमार, रणसिंह गहलावत, प्रो० आजादसिंह बांगड़, का० ईश्वर सिंह राठी आदि ने श्रद्धांजलि अर्पित की।

पुराने आर्यसमाजी.... पृष्ठ 7 का शेष....

सुपुत्र नरेन्द्र, वीरेन्द्र व ब्रह्मप्रकाश तथा दो सुपुत्री सविता और पवित्रा हैं। बड़ा लड़का नरेन्द्र अब नम्बरदार है, जिसे कप्तान भी कहते हैं। इनकी धर्मपत्नी श्रीमती चन्द्रकला यादव जिला पार्षद भी रह चुकी हैं। पोते-पोतियों सहित महाशय जी का परिवार खुशहाल एवं सम्पन्न है। महाशय जी के नाम से इनकी विशेष पहचान और आदर सम्मान है। मैं (इस लेख को लिखने वाला) इसी नौताना गांव का रहने वाला हूँ। मैंने बचपन से ही महाशय जी के जीवन को देखा है। उन्हीं की प्रेरणा से मैं आर्यसमाजी बना। आठवीं तक गांव में पढ़कर अबोहर पंजाब में चला गया। वहीं शिक्षा प्राप्त कर सर्विस लगने के कारण गांव में आना-जाना नहीं रहा, परन्तु महाशय जी से कभी न कभी मिलना होता रहा। मेरे दिल में उनके प्रति श्रद्धा है। उनमें पुराने आर्यसमाजियों के गुण समाहित हैं, जो अपनी भेशभूषा, व्यक्तित्व, ईमानदारी एवं चेहरे के रोल के कारण दूसरों पर प्रभाव डालते हैं। पुराने आर्य दिखावा कम करते थे, वास्तविक आर्य जीवन जीते थे। यही उनकी पहचान एवं विशेषता थी।

शोक-समाचार

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा दयानन्दमठ रोहतक के कार्यालयाधीक्षक श्री सत्यवान आर्य जी के दामाद श्री विकास मलिक गाँव कारोर जिला रोहतक का दिनांक 15 सितम्बर 2023 को वाहन दुर्घटना में निधन हो गया। श्री विकास मलिक जी बहुत ही उदार और मिलनसार व्यक्ति थे। विकास जी रेलवे के हैड कोच के रूप में कार्यरत थे। इनका खेलों के प्रति भी विशेष रुचि थी।

इनके आकस्मिक निधन पर आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा दयानन्दमठ रोहतक हार्दिक शोक प्रकट करती है तथा दिवंगत आत्मा की सद्गति के लिए परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करती है कि प्रभु उनको अपने चरणों में स्थान दे तथा परिवार को इस दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करे। **-सम्पादक**

वेद-प्रवचन.... पृष्ठ 2 का शेष....

में पानी भर आता है। ईश्वर की प्रार्थनाओं का गान करने से भी आत्मा को सन्तोष होता है। उपनिषद् कहती है-

समाने वृक्षे पुरुषो निमग्नोऽनीशया शोचति मुह्यमानः।
जुष्टं यद्वा पश्यत्यन्यमीशमस्य महिमानमिति वीतशोक॥

-मुण्डक उपनिषद्, मुण्डक 3, खण्ड 1, मन्त्र 2

(समाने वृक्षे) सृष्टिरूप वृक्ष में (निमग्नः पुरुषः) डूबा हुआ जीव (अनीशया मुह्यमानः) मोह में फँसकर अज्ञानता से समझता है कि मैं विवश हूँ। मेरा कोई है नहीं। कहाँ जाऊँ? क्या करूँ? कौन मेरी सहायता करेगा? परन्तु जब ध्यान पूर्वक विचार करता है तो उसे विश्वास हो जाता है कि इस सृष्टिरूपी वृक्ष पर एक और सत्ता है (अन्यम् ईशम्) जों मुझसे अधिक शक्तिशाली है। यह मेरा ईश, स्वामी या रक्षक है। यह इतना महान् है कि इसकी महिमा को जानकर ही मेरा शोक दूर हो जाएगा। बच्चा घोर भयानक जंगल में अपने को अकेला समझकर रोता है परन्तु उसी समय यदि वह अपने पिता को देख लेता है तो प्रसन्न हो जाता है कि पिता की गोद पाकर मुझे किसका भय है? प्रभु चित्र भी हैं और चन्द्र भी। चित्र हैं इसलिए कि सान्त जीव के लिए अनन्त प्रभु का अन्त जानना असम्भव है। परन्तु ऐसे महान् प्रभु 'चन्द्र' भी है, क्योंकि इन्हीं से आनन्द की प्राप्ति होती है।

शोक-समाचार

आदरणीय आचार्य देवव्रत जी महामहिम राज्यपाल गुजरात की आदरणीया भाभी जी व माननीय श्री महेन्द्र सिंह जी धर्मपत्नी श्रीमती धर्मो देवी जी के निधन का दुःखद समाचार पाकर स्तब्ध हैं। श्रीमती धर्मो देवी जी बहुत ही सौम्य एवं सरल स्वभाव वाली महिला थीं। वे सदा जनकल्याण के लिए अग्रणी रहती थीं। ऐसी महिला का संसार से चले जाना हम सब के लिए दुःख का विषय है। आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के समस्त पदाधिकारी एवं सदस्य ईश्वर से उनकी सद्गति एवं शान्ति के लिए प्रार्थना करते हैं। परमपिता परमात्मा स्वर्गीय श्रीमती धर्मो देवी जी के परिवार को इस दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

-सम्पादक

वैदिक भक्ति साधन आश्रम आर्य नगर रोहतक में आर्य वीर दल हरियाणा की ओर से मीटिंग का आयोजन किया गया जिसमें आर्य वीर दल हरियाणा सभी अधिकारी व सदस्यगण उपस्थित रहे। आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा दयानन्दमठ रोहतक के महामन्त्री श्री उमेद सिंह शर्मा, अन्तरंग सदस्य श्री आचार्य ऋषिपाल जी आदि अनेक गणमान्य व्यक्ति भी उपस्थित रहे।

वैदिक भक्ति साधन आश्रम आर्य नगर रोहतक में आर्य वीर दल हरियाणा की ओर से मीटिंग का आयोजन किया गया जिसमें आर्य वीर दल हरियाणा के प्रधान संचालक श्री उमेद सिंह शर्मा श्रोताओं को अपना उद्बोधन देते हुए तथा उपस्थित अधिकारी व सदस्यगण सामने बैठे हुए। अन्तरंग सदस्य आचार्य ऋषिपाल जी, श्री देशराज आर्य आदि अनेक गणमान्य व्यक्ति भी उपस्थित रहे।

शिक्षक दिवस के अवसर पर रोटरी क्लब नरवाना (जीन्द) की तरफ से आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा दयानन्दमठ रोहतक के महामन्त्री श्री उमेद सिंह शर्मा जी का स्वागत करते हुए रोटरी क्लब नरवाना के पदाधिकारी व सदस्यगण।

प्रेषक :
मन्त्री
आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा
दयानन्द मठ, रोहतक
हरियाणा, 124001

श्री ....

पता ....

....

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा (रजि.) के स्वामित्व में मुद्रक, प्रकाशक उमेद शर्मा ने दुर्गेश्वरी प्रिंटर्स के लिए आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक से मुद्रित एवं कार्यालय, सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ रोहतक-124001 से प्रकाशित।

- सम्पादक उमेद शर्मा